

[يُنشر لأول مرة] إنسان يدعوا الله ويتحرج ساعات الإجابة لكن لا يستجاب له للشيخ ابن باز -كبار العلماء-

عبدالعزيز بن باز

يسر مشروع كبار العلماء بالكويت وبالتعاون مع مؤسسة الشيخ عبدالعزيز بن باز رحمه الله ان يقدموا لكم هذه المادة فذهب الاخوان يطرح سؤال ببدأ بقوله تعالى وقال ربكم ادعوني استجب لكم. فانا ادعو الله سبحانه وتعالى واقوم الليل - 00:00:00 واختار الاوقات المناسبة التي تستجاب الدعوة فيها مثل ساعة يوم الجمعة وغيرها. ولكن لا يستجاب الدعاء افيدوني جزاكم الله خيرا. عدم الاستجابة لها اسباب. قد يدعوا الانسان في اخر الليل ويدعو في بين - 00:00:22 00:00:42 00:01:02 00:01:22 00:01:42 00:02:02 00:02:22 00:02:42 00:03:12 00:03:32 00:04:02 00:04:22 00:05:02 00:05:22 00:05:42 00:06:02 00:06:22 00:06:42 00:07:02 00:07:22 00:07:42 00:08:02 00:08:22 00:08:42 00:09:02 00:09:22 00:09:42 00:10:02 00:10:22 00:10:42 00:11:02 00:11:22 00:11:42 00:12:02 00:12:22 00:12:42 00:13:02 00:13:22 00:13:42 00:14:02 00:14:22 00:14:42 00:15:02 00:15:22 00:15:42 00:16:02 00:16:22 00:16:42 00:17:02 00:17:22 00:17:42 00:18:02 00:18:22 00:18:42 00:19:02 00:19:22 00:19:42 00:20:02 00:20:22 00:20:42 00:21:02 00:21:22 00:21:42 00:22:02 00:22:22 00:22:42 00:23:02 00:23:22 00:23:42 00:24:02 00:24:22 00:24:42 00:25:02 00:25:22 00:25:42 00:26:02 00:26:22 00:26:42 00:27:02 00:27:22 00:27:42 00:28:02 00:28:22 00:28:42 00:29:02 00:29:22 00:29:42 00:30:02 00:30:22 00:30:42 00:31:02 00:31:22 00:31:42 00:32:02 00:32:22 00:32:42 00:33:02 00:33:22 00:33:42 00:34:02 00:34:22 00:34:42 00:35:02 00:35:22 00:35:42 00:36:02 00:36:22 00:36:42 00:37:02 00:37:22 00:37:42 00:38:02 00:38:22 00:38:42 00:39:02 00:39:22 00:39:42 00:40:02 00:40:22 00:40:42 00:41:02 00:41:22 00:41:42 00:42:02 00:42:22 00:42:42 00:43:02 00:43:22 00:43:42 00:44:02 00:44:22 00:44:42 00:45:02 00:45:22 00:45:42 00:46:02 00:46:22 00:46:42 00:47:02 00:47:22 00:47:42 00:48:02 00:48:22 00:48:42 00:49:02 00:49:22 00:49:42 00:50:02 00:50:22 00:50:42 00:51:02 00:51:22 00:51:42 00:52:02 00:52:22 00:52:42 00:53:02 00:53:22 00:53:42 00:54:02 00:54:22 00:54:42 00:55:02 00:55:22 00:55:42 00:56:02 00:56:22 00:56:42 00:57:02 00:57:22 00:57:42 00:58:02 00:58:22 00:58:42 00:59:02 00:59:22 00:59:42 00:60:02 00:60:22 00:60:42 00:61:02 00:61:22 00:61:42 00:62:02 00:62:22 00:62:42 00:63:02 00:63:22 00:63:42 00:64:02 00:64:22 00:64:42 00:65:02 00:65:22 00:65:42 00:66:02 00:66:22 00:66:42 00:67:02 00:67:22 00:67:42 00:68:02 00:68:22 00:68:42 00:69:02 00:69:22 00:69:42 00:70:02 00:70:22 00:70:42 00:71:02 00:71:22 00:71:42 00:72:02 00:72:22 00:72:42 00:73:02 00:73:22 00:73:42 00:74:02 00:74:22 00:74:42 00:75:02 00:75:22 00:75:42 00:76:02 00:76:22 00:76:42 00:77:02 00:77:22 00:77:42 00:78:02 00:78:22 00:78:42 00:79:02 00:79:22 00:79:42 00:80:02 00:80:22 00:80:42 00:81:02 00:81:22 00:81:42 00:82:02 00:82:22 00:82:42 00:83:02 00:83:22 00:83:42 00:84:02 00:84:22 00:84:42 00:85:02 00:85:22 00:85:42 00:86:02 00:86:22 00:86:42 00:87:02 00:87:22 00:87:42 00:88:02 00:88:22 00:88:42 00:89:02 00:89:22 00:89:42 00:90:02 00:90:22 00:90:42 00:91:02 00:91:22 00:91:42 00:92:02 00:92:22 00:92:42 00:93:02 00:93:22 00:93:42 00:94:02 00:94:22 00:94:42 00:95:02 00:95:22 00:95:42 00:96:02 00:96:22 00:96:42 00:97:02 00:97:22 00:97:42 00:98:02 00:98:22 00:98:42 00:99:02 00:99:22 00:99:42 00:100:02 00:100:22 00:100:42 00:101:02 00:101:22 00:101:42 00:102:02 00:102:22 00:102:42 00:103:02 00:103:22 00:103:42 00:104:02 00:104:22 00:104:42 00:105:02 00:105:22 00:105:42 00:106:02 00:106:22 00:106:42 00:107:02 00:107:22 00:107:42 00:108:02 00:108:22 00:108:42 00:109:02 00:109:22 00:109:42 00:110:02 00:110:22 00:110:42 00:111:02 00:111:22 00:111:42 00:112:02 00:112:22 00:112:42 00:113:02 00:113:22 00:113:42 00:114:02 00:114:22 00:114:42 00:115:02 00:115:22 00:115:42 00:116:02 00:116:22 00:116:42 00:117:02 00:117:22 00:117:42 00:118:02 00:118:22 00:118:42 00:119:02 00:119:22 00:119:42 00:120:02 00:120:22 00:120:42 00:121:02 00:121:22 00:121:42 00:122:02 00:122:22 00:122:42 00:123:02 00:123:22 00:123:42 00:124:02 00:124:22 00:124:42 00:125:02 00:125:22 00:125:42 00:126:02 00:126:22 00:126:42 00:127:02 00:127:22 00:127:42 00:128:02 00:128:22 00:128:42 00:129:02 00:129:22 00:129:42 00:130:02 00:130:22 00:130:42 00:131:02 00:131:22 00:131:42 00:132:02 00:132:22 00:132:42 00:133:02 00:133:22 00:133:42 00:134:02 00:134:22 00:134:42 00:135:02 00:135:22 00:135:42 00:136:02 00:136:22 00:136:42 00:137:02 00:137:22 00:137:42 00:138:02 00:138:22 00:138:42 00:139:02 00:139:22 00:139:42 00:140:02 00:140:22 00:140:42 00:141:02 00:141:22 00:141:42 00:142:02 00:142:22 00:142:42 00:143:02 00:143:22 00:143:42 00:144:02 00:144:22 00:144:42 00:145:02 00:145:22 00:145:42 00:146:02 00:146:22 00:146:42 00:147:02 00:147:22 00:147:42 00:148:02 00:148:22 00:148:42 00:149:02 00:149:22 00:149:42 00:150:02 00:150:22 00:150:42 00:151:02 00:151:22 00:151:42 00:152:02 00:152:22 00:152:42 00:153:02 00:153:22 00:153:42 00:154:02 00:154:22 00:154:42 00:155:02 00:155:22 00:155:42 00:156:02 00:156:22 00:156:42 00:157:02 00:157:22 00:157:42 00:158:02 00:158:22 00:158:42 00:159:02 00:159:22 00:159:42 00:160:02 00:160:22 00:160:42 00:161:02 00:161:22 00:161:42 00:162:02 00:162:22 00:162:42 00:163:02 00:163:22 00:163:42 00:164:02 00:164:22 00:164:42 00:165:02 00:165:22 00:165:42 00:166:02 00:166:22 00:166:42 00:167:02 00:167:22 00:167:42 00:168:02 00:168:22 00:168:42 00:169:02 00:169:22 00:169:42 00:170:02 00:170:22 00:170:42 00:171:02 00:171:22 00:171:42 00:172:02 00:172:22 00:172:42 00:173:02 00:173:22 00:173:42 00:174:02 00:174:22 00:174:42 00:175:02 00:175:22 00:175:42 00:176:02 00:176:22 00:176:42 00:177:02 00:177:22 00:177:42 00:178:02 00:178:22 00:178:42 00:179:02 00:179:22 00:179:42 00:180:02 00:180:22 00:180:42 00:181:02 00:181:22 00:181:42 00:182:02 00:182:22 00:182:42 00:183:02 00:183:22 00:183:42 00:184:02 00:184:22 00:184:42 00:185:02 00:185:22 00:185:42 00:186:02 00:186:22 00:186:42 00:187:02 00:187:22 00:187:42 00:188:02 00:188:22 00:188:42 00:189:02 00:189:22 00:189:42 00:190:02 00:190:22 00:190:42 00:191:02 00:191:22 00:191:42 00:192:02 00:192:22 00:192:42 00:193:02 00:193:22 00:193:42 00:194:02 00:194:22 00:194:42 00:195:02 00:195:22 00:195:42 00:196:02 00:196:22 00:196:42 00:197:02 00:197:22 00:197:42 00:198:02 00:198:22 00:198:42 00:199:02 00:199:22 00:199:42 00:200:02 00:200:22 00:200:42 00:201:02 00:201:22 00:201:42 00:202:02 00:202:22 00:202:42 00:203:02 00:203:22 00:203:42 00:204:02 00:204:22 00:204:42 00:205:02 00:205:22 00:205:42 00:206:02 00:206:22 00:206:42 00:207:02 00:207:22 00:207:42 00:208:02 00:208:22 00:208:42 00:209:02 00:209:22 00:209:42 00:210:02 00:210:22 00:210:42 00:211:02 00:211:22 00:211:42 00:212:02 00:212:22 00:212:42 00:213:02 00:213:22 00:213:42 00:214:02 00:214:22 00:214:42 00:215:02 00:215:22 00:215:42 00:216:02 00:216:22 00:216:42 00:217:02 00:217:22 00:217:42 00:218:02 00:218:22 00:218:42 00:219:02 00:219:22 00:219:42 00:220:02 00:220:22 00:220:42 00:221:02 00:221:22 00:221:42 00:222:02 00:222:22 00:222:42 00:223:02 00:223:22 00:223:42 00:224:02 00:224:22 00:224:42 00:225:02 00:225:22 00:225:42 00:226:02 00:226:22 00:226:42 00:227:02 00:227:22 00:227:42 00:228:02 00:228:22 00:228:42 00:229:02 00:229:22 00:229:42 00:230:02 00:230:22 00:230:42 00:231:02 00:231:22 00:231:42 00:232:02 00:232:22 00:232:42 00:233:02 00:233:22 00:233:42 00:234:02 00:234:22 00:234:42 00:235:02 00:235:22 00:235:42 00:236:02 00:236:22 00:236:42 00:237:02 00:237:22 00:237:42 00:238:02 00:238:22 00:238:42 00:239:02 00:239:22 00:239:42 00:240:02 00:240:22 00:240:42 00:241:02 00:241:22 00:241:42 00:242:02 00:242:22 00:242:42 00:243:02 00:243:22 00:243:42 00:244:02 00:244:22 00:244:42 00:245:02 00:245:22 00:245:42 00:246:02 00:246:22 00:246:42 00:247:02 00:247:22 00:247:42 00:248:02 00:248:22 00:248:42 00:249:02 00:249:22 00:249:42 00:250:02 00:250:22 00:250:42 00:251:02 00:251:22 00:251:42

اعماله السيئة التقصير في امر الله ولتعاطيهمها يمنع الحجاب من سينات وارخطاء تركها نعم. اه ثم ايضا هناك سبب اخر بينه النبي [صلى الله عليه وسلم](#) وبينه اهل العلم وهو انه قد يؤجل ويؤخر ليجتهد في العبادة ليجتهد في الدعاء ولعل الله يفتح - [00:04:32](#)

له ابوابا من الخير لاسباب هذه الحاجة التي يلح فيها. فتكون حاله اصلاح من حاله الاولى بسبب هذا اللجوء الى الله والاجتهاد في الدعاء والحرص على طلب الحاجة فيفتح الله عليه ابوابا كثيرة من الخير ويزداد بذلك صلاح قلبه وقوه ايمانه - [00:05:02](#)

فتكون هذه الحاجة التي طلبها سبب خير كثير وسبب هداية وصلاح ولهذا قال عليه الصلاة والسلام يستجاب لاحكم ما لم يعجل فيقول دعوت ودعوت ولم اره يستجاب لي. فيستحضر عند ذلك ويدع الدعاء. فينبغي ان لا - [00:05:22](#)

جمل والحديث ان الله يحب الملتحين في الدعاء. حديث النبي يغضب عليه فينبغي ان يلحى بالدعاء ويجتهد ولا ييأس ويعحسن الظن بربه ويرجوه سبحانه ان يعجل هذا اذا كان فيها خير او يعطيها او يعطيه خيرا منها اذا كان ذلك خيرا له - [00:05:42](#)

او يدخلها في الاخرة ان كان خظلا فربك احكم واعلم سبحانه وتعالى. نعم. جزاكم الله خيرا - [00:06:02](#)